



Kamalkant Sharma

05 Aug 1970

03:45 AM

Muzaffarnagar

Model: Web-MyKundli

Order No: 121373601

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 4-05/08/1970
दिन _____: मंगल-बुधवार
जन्म समय _____: 03:45:00 घंटे
इष्ट _____: 55:11:09 घटी
स्थान _____: Muzaffarnagar
राज्य _____: Uttar Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 29:28:00 उत्तर
रेखांश _____: 77:42:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:19:12 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 03:25:48 घंटे
वेलान्तर _____: -00:06:04 घंटे
साम्पातिक काल _____: 00:18:02 घंटे
सूर्योदय _____: 05:40:32 घंटे
सूर्यास्त _____: 19:09:36 घंटे
दिनमान _____: 13:29:04 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: उत्तर
ऋतु _____: वर्षा
सूर्य के अंश _____: 18:39:02 कर्क
लग्न के अंश _____: 23:08:17 मिथुन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मिथुन - बुध
राशि-स्वामी _____: सिंह - सूर्य
नक्षत्र-चरण _____: पू०फाल्गुनी - 2
नक्षत्र स्वामी _____: शुक्र
योग _____: परिघ
करण _____: तैतिल
गण _____: मनुष्य
योनि _____: मूषक
नाड़ी _____: मध्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: वनचर
वर्ग _____: श्वान
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: टा-टाटा
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: ताम्र - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: सिंह

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1892	श्रावण	14
पंजाबी	संवत : 2027	श्रावण	21
बंगाली	सन् : 1377	श्रावण	20
तमिल	संवत : 2027	आदी	21
केरल	कोल्लम : 1145	कर्कदम	20
नेपाली	संवत : 2027	श्रावण	21
चैत्रादि	संवत : 2027	श्रावण	शुक्ल 3
कार्तिकादि	संवत : 2027	श्रावण	शुक्ल 3

पंचांग

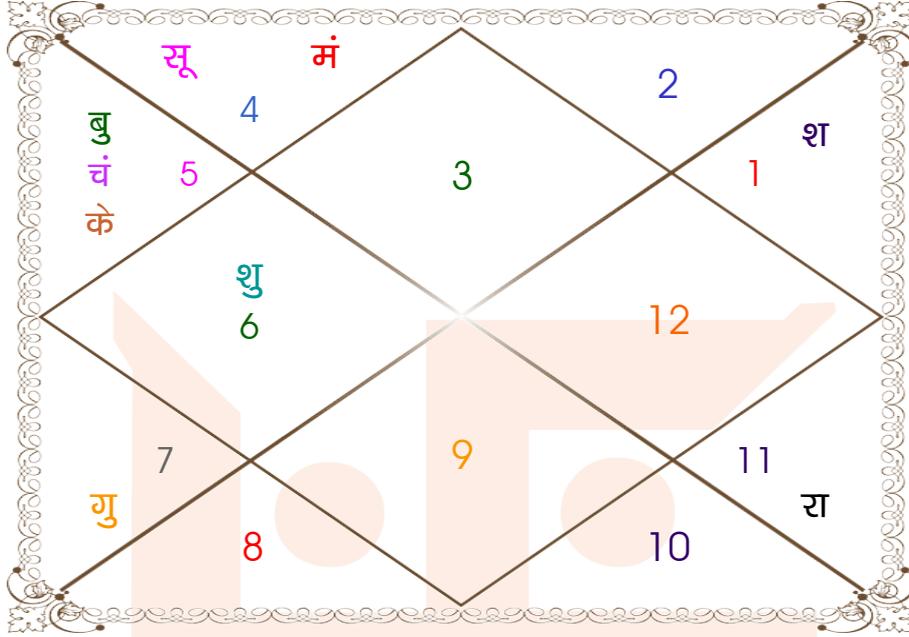
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 2
तिथि समाप्ति काल _____ : 16:35:44
जन्म तिथि _____ : 3
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : मघा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 18:53:42 घंटे
जन्म योग _____ : पू०फाल्गुनी
सूर्योदय कालीन योग _____ : वरियान
योग समाप्ति काल _____ : 15:49:17 घंटे
जन्म योग _____ : परिघ
सूर्योदय कालीन करण _____ : कौलव
करण समाप्ति काल _____ : 16:35:44 घंटे
जन्म करण _____ : तैतिल
भयात _____ : 22:08:14
भभोग _____ : 67:50:47
भोग्य दशा काल _____ : शुक्र 13 वर्ष 5 मा 23 दि

घात चक्र

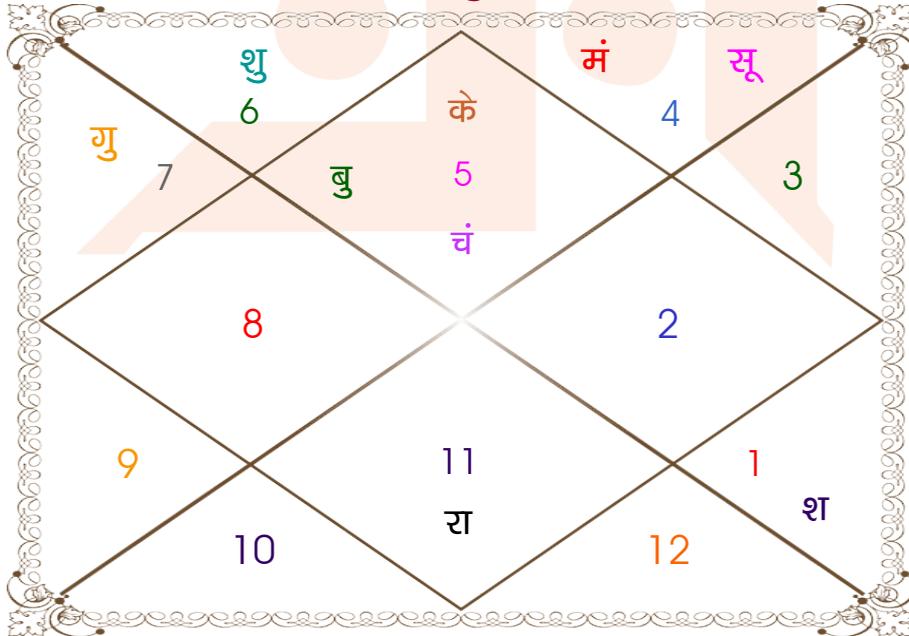
मास _____ : ज्येष्ठ
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : मूल
योग _____ : धृति
करण _____ : बव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मेष
लग्न _____ : मीन
सूर्य _____ : धनु
चन्द्र _____ : मकर
मंगल _____ : मकर
बुध _____ : तुला
गुरु _____ : कुम्भ
शुक्र _____ : मीन
शनि _____ : वृश्चिक
राहु _____ : मेष

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुण्डली

	श		ल
रा			मं सू
			के चं बु
		गु	शु

लग्न कुण्डली

	श		
ल			रा
	मं सू		
बु के	चं	गु	शु

विंशोत्तरी
शुक्र 13वर्ष 5मा 23दि
शुक्र

05/08/1970

28/01/2084

शुक्र	28/01/1984
सूर्य	28/01/1990
चन्द्र	28/01/2000
मंगल	28/01/2007
राहु	27/01/2025
गुरु	27/01/2041
शनि	28/01/2060
बुध	27/01/2077
केतु	28/01/2084

योगिनी

उल्का 4वर्ष 0मा 16दि
मंगला

21/08/2025

21/08/2026

मंगला	31/08/2025
पिंगला	20/09/2025
धान्या	21/10/2025
भ्रामरी	30/11/2025
भद्रिका	20/01/2026
उल्का	22/03/2026
सिद्धा	01/06/2026
संकटा	21/08/2026

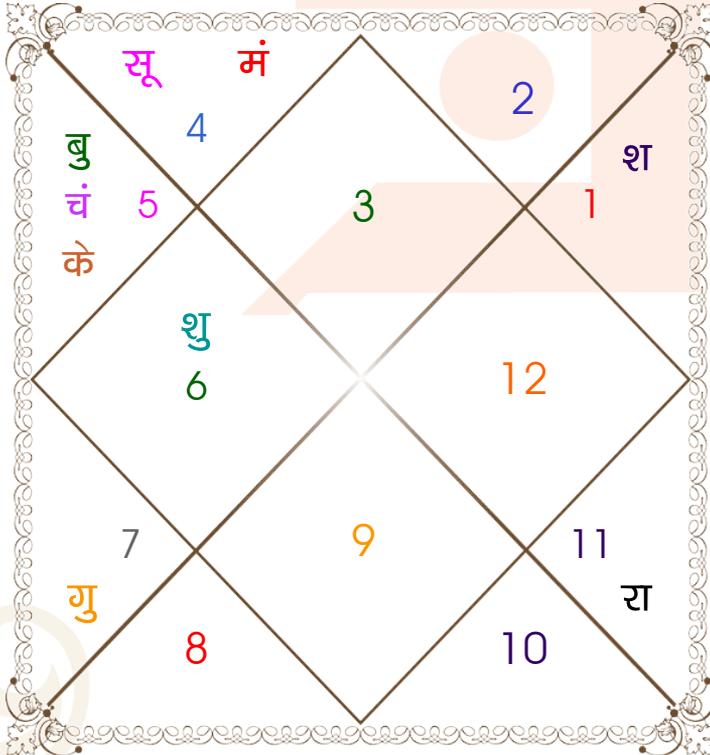
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मिथु	23:08:17	311:52:09	पुनर्वसु	1	7	बुध	गुरु	शनि	---
सूर्य			कर्क	18:39:02	00:57:29	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	केतु	मित्र राशि
चंद्र			सिंह	17:40:42	11:46:54	पू०फाल्गुनी	2	11	सूर्य	शुक्र	मंगल	मित्र राशि
मंगल	अ		कर्क	17:52:50	00:38:24	आश्लेषा	1	9	चंद्र	बुध	बुध	नीच राशि
बुध			सिंह	13:24:22	01:23:08	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	शुक्र	मित्र राशि
गुरु			तुला	05:10:59	00:06:53	चित्रा	4	14	शुक्र	मंगल	सूर्य	शत्रु राशि
शुक्र			कन्या	02:46:01	01:05:24	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	गुरु	नीच राशि
शनि			मेष	28:20:57	00:03:09	कृतिका	1	3	मंगल	सूर्य	चंद्र	नीच राशि
राहु			कुंभ	09:21:25	00:00:33	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	मित्र राशि
केतु			सिंह	09:21:25	00:00:33	मघा	3	10	सूर्य	केतु	शनि	शत्रु राशि
हर्ष			कन्या	12:25:18	00:02:35	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	राहु	---
नेप	व		वृश्चि	04:40:48	00:00:10	अनुराधा	1	17	मंगल	शनि	शनि	---
प्लूटो			कन्या	02:10:01	00:01:44	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	गुरु	---
दशम भाव			मीन	11:27:54	--	उ०भाद्रपद	--	26	गुरु	शनि	चंद्र	--

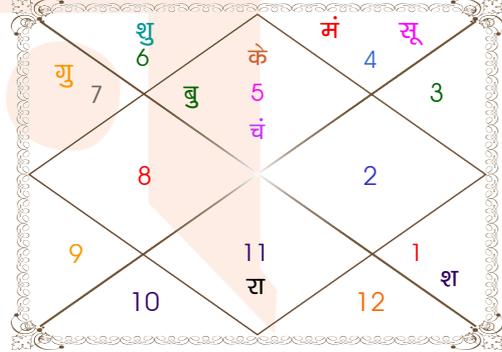
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:26:55

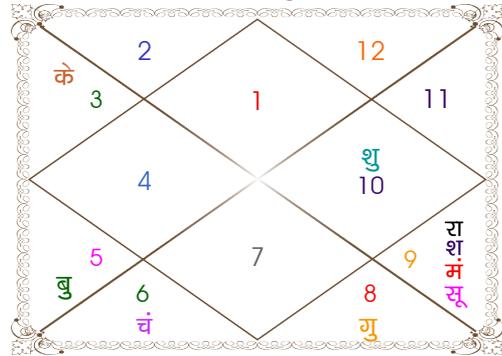
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मिथुन 06:11:33	मिथुन 23:08:17
2	कर्क 06:11:33	कर्क 19:14:49
3	सिंह 02:18:05	सिंह 15:21:22
4	सिंह 28:24:38	कन्या 11:27:54
5	कन्या 28:24:38	तुला 15:21:22
6	वृश्चिक 02:18:05	वृश्चिक 19:14:49
7	धनु 06:11:33	धनु 23:08:17
8	मकर 06:11:33	मकर 19:14:49
9	कुम्भ 02:18:05	कुम्भ 15:21:22
10	कुम्भ 28:24:38	मीन 11:27:54
11	मीन 28:24:38	मेष 15:21:22
12	वृष 02:18:05	वृष 19:14:49

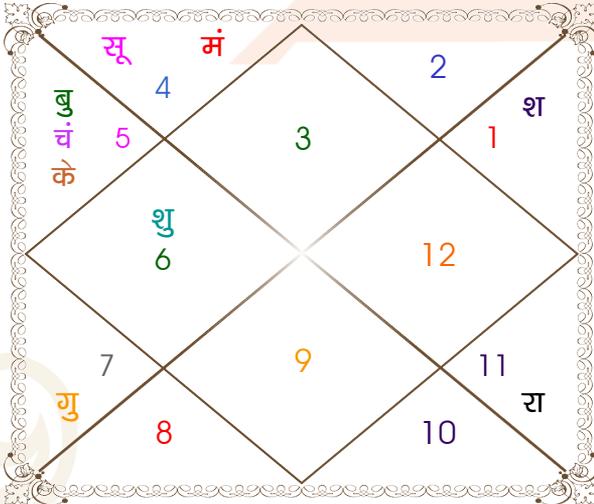
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मिथुन	23:08:17
2	कर्क	15:40:10
3	सिंह	11:04:26
4	कन्या	11:27:54
5	तुला	16:19:03
6	वृश्चिक	21:24:51
7	धनु	23:08:17
8	मकर	15:40:10
9	कुम्भ	11:04:26
10	मीन	11:27:54
11	मेष	16:19:03
12	वृष	21:24:51

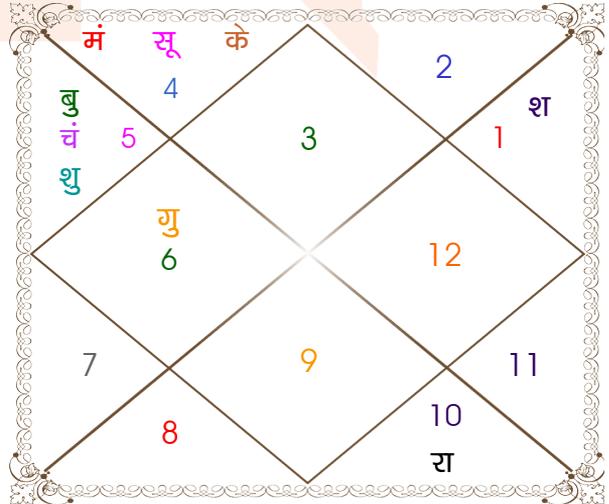
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 13 वर्ष 5 मास 23 दिन

शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष	राहु 18 वर्ष
05/08/1970	28/01/1984	28/01/1990	28/01/2000	28/01/2007
28/01/1984	28/01/1990	28/01/2000	28/01/2007	27/01/2025
00/00/0000	सूर्य 17/05/1984	चंद्र 28/11/1990	मंगल 25/06/2000	राहु 10/10/2009
00/00/0000	चंद्र 15/11/1984	मंगल 29/06/1991	राहु 14/07/2001	गुरु 05/03/2012
05/08/1970	मंगल 23/03/1985	राहु 28/12/1992	गुरु 20/06/2002	शनि 10/01/2015
मंगल 30/03/1971	राहु 15/02/1986	गुरु 29/04/1994	शनि 29/07/2003	बुध 29/07/2017
राहु 29/03/1974	गुरु 04/12/1986	शनि 28/11/1995	बुध 26/07/2004	केतु 16/08/2018
गुरु 27/11/1976	शनि 16/11/1987	बुध 29/04/1997	केतु 22/12/2004	शुक्र 16/08/2021
शनि 28/01/1980	बुध 21/09/1988	केतु 28/11/1997	शुक्र 21/02/2006	सूर्य 11/07/2022
बुध 28/11/1982	केतु 27/01/1989	शुक्र 29/07/1999	सूर्य 29/06/2006	चंद्र 10/01/2024
केतु 28/01/1984	शुक्र 28/01/1990	सूर्य 28/01/2000	चंद्र 28/01/2007	मंगल 27/01/2025

गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष
27/01/2025	27/01/2041	28/01/2060	27/01/2077	28/01/2084
27/01/2041	28/01/2060	27/01/2077	28/01/2084	00/00/0000
गुरु 18/03/2027	शनि 31/01/2044	बुध 26/06/2062	केतु 25/06/2077	शुक्र 30/05/2087
शनि 28/09/2029	बुध 10/10/2046	केतु 23/06/2063	शुक्र 26/08/2078	सूर्य 29/05/2088
बुध 04/01/2032	केतु 19/11/2047	शुक्र 23/04/2066	सूर्य 31/12/2078	चंद्र 28/01/2090
केतु 10/12/2032	शुक्र 19/01/2051	सूर्य 27/02/2067	चंद्र 01/08/2079	मंगल 05/08/2090
शुक्र 11/08/2035	सूर्य 01/01/2052	चंद्र 29/07/2068	मंगल 29/12/2079	00/00/0000
सूर्य 29/05/2036	चंद्र 01/08/2053	मंगल 26/07/2069	राहु 15/01/2081	00/00/0000
चंद्र 28/09/2037	मंगल 10/09/2054	राहु 12/02/2072	गुरु 22/12/2081	00/00/0000
मंगल 04/09/2038	राहु 17/07/2057	गुरु 20/05/2074	शनि 31/01/2083	00/00/0000
राहु 27/01/2041	गुरु 28/01/2060	शनि 27/01/2077	बुध 28/01/2084	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 13 वर्ष 5 मा 21 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - गुरु		गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र	
27/01/2025		18/03/2027		28/09/2029		04/01/2032		10/12/2032	
18/03/2027		28/09/2029		04/01/2032		10/12/2032		11/08/2035	
गुरु	11/05/2025	शनि	11/08/2027	बुध	23/01/2030	केतु	24/01/2032	शुक्र	21/05/2033
शनि	12/09/2025	बुध	20/12/2027	केतु	12/03/2030	शुक्र	20/03/2032	सूर्य	09/07/2033
बुध	31/12/2025	केतु	12/02/2028	शुक्र	28/07/2030	सूर्य	06/04/2032	चंद्र	28/09/2033
केतु	14/02/2026	शुक्र	15/07/2028	सूर्य	08/09/2030	चंद्र	05/05/2032	मंगल	24/11/2033
शुक्र	24/06/2026	सूर्य	31/08/2028	चंद्र	16/11/2030	मंगल	25/05/2032	राहु	19/04/2034
सूर्य	02/08/2026	चंद्र	16/11/2028	मंगल	03/01/2031	राहु	15/07/2032	गुरु	27/08/2034
चंद्र	06/10/2026	मंगल	09/01/2029	राहु	07/05/2031	गुरु	29/08/2032	शनि	28/01/2035
मंगल	21/11/2026	राहु	27/05/2029	गुरु	26/08/2031	शनि	22/10/2032	बुध	15/06/2035
राहु	18/03/2027	गुरु	28/09/2029	शनि	04/01/2032	बुध	10/12/2032	केतु	11/08/2035
गुरु - सूर्य		गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि	
11/08/2035		29/05/2036		28/09/2037		04/09/2038		27/01/2041	
29/05/2036		28/09/2037		04/09/2038		27/01/2041		31/01/2044	
सूर्य	25/08/2035	चंद्र	08/07/2036	मंगल	18/10/2037	राहु	13/01/2039	शनि	20/07/2041
चंद्र	19/09/2035	मंगल	06/08/2036	राहु	08/12/2037	गुरु	10/05/2039	बुध	23/12/2041
मंगल	06/10/2035	राहु	18/10/2036	गुरु	22/01/2038	शनि	26/09/2039	केतु	25/02/2042
राहु	18/11/2035	गुरु	22/12/2036	शनि	17/03/2038	बुध	28/01/2040	शुक्र	27/08/2042
गुरु	27/12/2035	शनि	09/03/2037	बुध	05/05/2038	केतु	19/03/2040	सूर्य	21/10/2042
शनि	12/02/2036	बुध	17/05/2037	केतु	24/05/2038	शुक्र	12/08/2040	चंद्र	21/01/2043
बुध	24/03/2036	केतु	14/06/2037	शुक्र	20/07/2038	सूर्य	25/09/2040	मंगल	26/03/2043
केतु	10/04/2036	शुक्र	03/09/2037	सूर्य	06/08/2038	चंद्र	07/12/2040	राहु	07/09/2043
शुक्र	29/05/2036	सूर्य	28/09/2037	चंद्र	04/09/2038	मंगल	27/01/2041	गुरु	31/01/2044
शनि - बुध		शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र	
31/01/2044		10/10/2046		19/11/2047		19/01/2051		19/01/2051	
10/10/2046		19/11/2047		19/01/2051		01/01/2052		01/08/2053	
बुध	18/06/2044	केतु	03/11/2046	शुक्र	30/05/2048	सूर्य	05/02/2051	चंद्र	18/02/2052
केतु	15/08/2044	शुक्र	09/01/2047	सूर्य	27/07/2048	चंद्र	06/03/2051	मंगल	23/03/2052
शुक्र	26/01/2045	सूर्य	30/01/2047	चंद्र	31/10/2048	मंगल	26/03/2051	राहु	17/06/2052
सूर्य	16/03/2045	चंद्र	04/03/2047	मंगल	07/01/2049	राहु	17/05/2051	गुरु	02/09/2052
चंद्र	06/06/2045	मंगल	28/03/2047	राहु	29/06/2049	गुरु	03/07/2051	शनि	03/12/2052
मंगल	02/08/2045	राहु	28/05/2047	गुरु	30/11/2049	शनि	26/08/2051	बुध	23/02/2053
राहु	27/12/2045	गुरु	21/07/2047	शनि	01/06/2050	बुध	15/10/2051	केतु	29/03/2053
गुरु	08/05/2046	शनि	23/09/2047	बुध	12/11/2050	केतु	04/11/2051	शुक्र	03/07/2053
शनि	10/10/2046	बुध	19/11/2047	केतु	19/01/2051	शुक्र	01/01/2052	सूर्य	01/08/2053

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

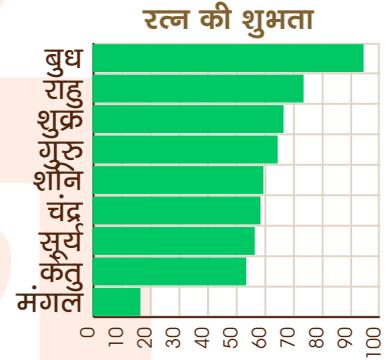
मूलांक	5
भाग्यांक	3
मित्र अंक	3, 5, 9
शत्रु अंक	2, 4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	बुध, शुक्र, शनि
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र, शनि
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	कन्या, कुम्भ, मेष
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	नीलम
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	94%	पराक्रम, स्वास्थ्य, सुख
गोमेद	राहु	73%	भाग्योदय, धनार्जन
हीरा	शुक्र	66%	सुख, कम खर्च, सन्तति सुख
पुखराज	गुरु	64%	सन्तति सुख, दम्पति, व्यावसायिक उन्नति
नीलम	शनि	59%	धनार्जन, दुर्घटना से बचाव, भाग्योदय
मोती	चंद्र	58%	पराक्रम, धन
माणिक्य	सूर्य	56%	धन, पराक्रम
लहसुनिया	केतु	53%	पराक्रम, धन
मूंगा	मंगल	16%	धन हानि, हानि, शत्रु व रोग



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	28/01/1984	38%	41%	16%	100%	64%	78%	66%	80%	59%
सूर्य	28/01/1990	69%	64%	28%	94%	70%	53%	44%	61%	31%
चंद्र	28/01/2000	62%	70%	16%	100%	64%	66%	59%	61%	31%
मंगल	28/01/2007	62%	64%	41%	81%	70%	66%	59%	61%	59%
राहु	27/01/2025	38%	41%	0%	94%	64%	72%	66%	86%	31%
गुरु	27/01/2041	62%	64%	28%	81%	77%	53%	59%	73%	53%
शनि	28/01/2060	38%	41%	0%	100%	64%	72%	72%	80%	31%
बुध	27/01/2077	62%	41%	16%	100%	64%	72%	59%	73%	53%
केतु	28/01/2084	38%	41%	28%	94%	64%	72%	44%	61%	66%

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	23/07/1975-07/09/1977	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	07/09/1977-04/11/1979	15/03/1980-27/07/1980	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	04/11/1979-15/03/1980	27/07/1980-06/10/1982	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	अशुभ	धन
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	सम	पराक्रम हानि
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	सम	सुख
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	शत्रु से कष्ट
अष्टम स्थानस्थ ढैया	शुभ	व्यावसाय

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हों जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपके जन्म समय में चन्द्रकुंडली में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष हैं परन्तु शास्त्रानुसार आपका यह मांगलिक दोष भंग हो रहा है। अतः यह मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा स्वभाव व्यशील होगा परन्तु अशुभ कार्यों की अपेक्षा आप शुभ कार्यों पर ही अधिक व्यय करेंगे। साथ ही जीवन में समस्त सांसारिक भोग्य पदार्थों का आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करने में समर्थ रहेंगे आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा तथा आनन्द पूर्वक आप दाम्पत्य सुख का उपभोग करेंगे।

यद्यपि यह मंगल आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा तथापि इसके प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब हो सकता है। परन्तु विवाह कार्य अत्यंत ही शांत एवं सुखद वातावरण में सम्पन्न होगा एवं किसी भी प्रकार की अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। विवाह के उपरान्त आपका दाम्पत्य जीवन सुखी एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में आवश्यक सुख संसाधनों तथा भौतिक सामग्री से सुसम्पन्न रहेंगे आपका शत्रु पक्ष भी हमेशा कमजोर रहेगा। अतः शत्रुओं से आपको किसी भी प्रकार परेशानी या असुविधा नहीं होगी।

आपकी चन्द्रकुंडली में मंगल द्वादश भाव में स्थित है। अतः इसके शुभ प्रभाव से आप शुभ कार्यों पर व्यय करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। समस्त भोग्य पदार्थों को अर्जित तथा उपभोग करने में भाग्यशाली सिद्ध होंगे। मंगल की तृतीय भाव पर दृष्टि होने से आपके पराक्रम में नित्य वृद्धि होती रहेगी। आत्मविश्वास एवं साहसपूर्वक आप अपने समस्त सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करेंगे। समाज में अपना प्रभाव भी स्थापित करने में सफल रहेंगे। भाई बहनों से भी आप जीवन में पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे। षष्ठ भाव पर मंगल की दृष्टि होने से शत्रु

पक्ष प्रायः निर्बल रहेगा एवं आपका विरोध करने में सर्वदा असमर्थ रहेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि भावी जीवन साथी के लिए उत्तम रहेगी। अतः आपकी पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। स्वभाव में यदा कदा उग्रता का समावेश होगा परन्तु आपके प्रति उनके मन में पूर्ण सहयोग तथा समर्पण की भावना रहेगी तथा परस्पर संबंध भी घनिष्ठ एवं प्रेम पूर्वक रहेंगे। अतः आपका दाम्पत्य जीवन अत्यंत ही सुखी एवं आनन्द पूर्वक व्यतीत होगा।

अपने दाम्पत्य जीवन को अधिक सुखी एवं आनन्दमय बनाने के लिए आपको किसी गैर मांगलिक या ऐसी मंगली कन्या से विवाह करना चाहिए जिसका मांगलिक दोष उचित रूप से भंग हो रहा हो। इस प्रकार यदि आप अपना वैवाहिक जीवन प्रारंभ करेंगे तो जीवन में सर्व सौभाग्य, धनैश्वर्य, मान सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त होकर के समाज में पूर्ण यश अर्जित करने में सफलता प्राप्त करेंगे।

इसके अतिरिक्त जन्म कुंडली मिलान के समय यदि कन्या की कुंडली में भी द्वादश भाव में ही मंगल स्थित हो तो अत्यावश्यक होने पर विवाह करें अन्यथा उपेक्षा ही करें। क्यों कि समान भावों में मंगल होने से जीवन में अधिक व्यय होने के कारण यदा कदा अनावश्यक समस्याएं तथा बाधाएं उत्पन्न होंगी जिससे सुखी दाम्पत्य जीवन में तनाव या कटुता का वातावरण उत्पन्न हो सकता है। अन्य भावों में मंगल स्थित होने से अशुभ फलों का प्रभाव नष्ट हो जाएगा एवं शुभ फलों के प्रभाव में वृद्धि होगी जिससे आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। अतः सोच समझकर एवं सावधानी पूर्वक विवाह करने के लिए अन्तिम निर्णय लेना चाहिए जिससे भावी दाम्पत्य जीवन में किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न न हो।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरान्त पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ॥

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृ का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें । पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें । शम्मी की समिधा से हवन करें । बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें । गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों ।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



ग्रह फल

सूर्य

द्वितीय भाव में सूर्य हो तो जातक भाग्यवान्, सम्पत्तिवान्, मुखरोगी, झगड़ालू, नेत्रकर्णदन्तरोगी, राजभीरु, घरेलू जीवन दुःखी एवं स्त्री के लिए कुटुम्बियों से झगड़ने वाला होता है।

कर्कराशि में रवि हो तो जातक कीर्तिमान, लब्धप्रतिष्ठ, कार्यपरायण, चंचल, साम्यवादी, कफरोगी, इतिहासज्ञ एवं परोपकारी होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वितीय भाव में है। अतः आपके पिता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा अल्प मात्रा में शारीरिक दुर्बलता की अनुभूति होती रहेगी। आपके प्रति उनका प्रेम भाव रहेगा तथा विद्यार्जन एवं धनार्जन संबंधी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही वे समय समय पर आपको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप भी उनका हार्दिक सम्मान तथा आदर करेंगे एवं यत्नपूर्वक उनकी सेवा करने के लिए भी तत्पर रहेंगे। उनकी आज्ञा का पालन करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेद होने से विवाद आदि की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय पश्चात सब कुछ ही ठीक हो जाएगा।

चन्द्र

तृतीय, भाव में चन्द्रमा हो तो जातक आस्तिक, तपस्वी, प्रसन्नचित्त, कफरोगी, मधुरभाषी प्रेमी, भाईयों और बहिनों का रक्षक, साहसी, विद्वान, एवं कंजूस होता है।

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढदेही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति तृतीय भाव में है। अतः माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। आपके प्रति उनका पूर्ण अपनत्व तथा स्नेह का भाव रहेगा एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपकी सहायता करने के लिए वे नित्य तत्पर रहेंगी। साथ ही शक्ति, साहस एवं पराक्रम में आपकी वृद्धि में वे सदैव सहायक रहेंगी। इसके अतिरिक्त वे आपको समय समय पर अच्छा भोजन खिलाने के लिए भी तत्पर रहेंगी।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान तथा श्रद्धा का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा पालन के लिए प्रायः तत्पर रहेंगे। साथ ही यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु इससे आपके मधुर संबंधों में कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आप जीवन में उनकी पूर्ण सेवा तथा आर्थिक सहायता तथा अन्य प्रकार का सहयोग करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार असुविधा नहीं होने देंगे। इसके लिए आप सर्वदा प्रयत्नशील

रहेंगे।

मंगल

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

कर्क राशि में मंगल हो तो जातक कुशाबुद्धिवाला, धनवान्, बदमाश, कुशलचिकित्सक, या सर्जन, चंचलमनवाला सुखाभिलाषी, कृषक, रोगी एवं दुष्ट होता है।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

बुध

तृतीयभाव में बुध हो तो जातक सद्गुणी, कार्यदक्ष, परिश्रमी, मित्रप्रेमी, भीरु, धर्मात्मा, यात्राशील, व्यवसायी, चंचल, अल्पभातृवान्, विलासी, सन्ततिवान्, कवि, सम्पादक, सामुद्रिकशास्त्र का ज्ञाता एवं लेखक होता है।

सिंह राशि में बुध हो तो जातक मिथ्याभाषी, कुकर्मी, ठग, कामुक, भ्रमणशील, अभिमानी, वक्ता, कम उम्र में विवाह, आवेशपूर्ण स्वभाव एवं सरकारी नौकर होता है।

गुरु

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सट्टे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

तुला राशि में गुरु हो तो जातक सुन्दर, उदार, बली, योग्य धार्मिक, प्रवृत्ति, निष्पक्ष, बुद्धिमान्, व्यापार कुशल, कवि, लेखक, सम्पादक, बहुपुत्रवान् एवं सुखी होता है।

शुक्र

चतुर्थ भाव में शुक्र हो तो जातक बलवान्, परोपकारी, सुन्दर, व्यवहार कुशल, विलासी, दीर्घायु, पुत्रवान्, भाग्यवान्, सुखी, दानी, वाहनों का स्वामी एवं आस्तिक होता है।

कन्या राशि में शुक हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

ग्यारहवें भाव में शनि हो तो जातक बलवान् विद्वान्, दीर्घायु, शिल्पी, सुखी, चंचल, क्रोधी, योगाभ्यासी, नीतिवान् परिश्रमी, व्यवसायी, पुत्रहीन, कन्याप्रज्ञ एवं रोगहीन होता है।

मेष राशि में शनि हो तो जातक आत्मबलहीन, मूर्ख, आवारा, कूर जालफरेव करने वाला, व्यसनी, निर्धन, दुराचारी, कपटी लम्पट एवं कृतघ्न होता है।

राहु

नवम भाव में राहु हो तो जातक प्रवासी, वातरोगी, व्यर्थ परिश्रमी, दुष्टबुद्धि, भाग्योदय से रहित, तीर्थाटनशील एवं धर्मात्मा होता है।

कुम्भ राशि में राहु हो तो जातक विद्वान्, लेखक मितभाषी एवं मितव्ययी होता है।

केतु

तृतीय भाव में केतु हो तो जातक चंचल, वायुजनित रोगों से पीड़ित, भाई बहन विहीन, धनी, व्यर्थवादी एवं भूतप्रेतभक्त होता है।

सिंह राशि में केतु हो तो जातक बहुभाषी, डरपोक, असहिष्णु, सर्पदशन का भय एवं असन्तोषी होता है।

दशा विश्लेषण

महादशा :- गुरु
(27/01/2025 - 27/01/2041)

आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा 27/01/2025 को आरम्भ तथा 27/01/2041 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 16 वर्ष है। गुरु आपकी जन्मकुण्डली में पाँचवें भाव में स्थित है। पाँचवां भाव संतान, आनन्द, आमोद-प्रमोद, रोमांस, वर्ग-पहेली जैसी प्रतियोगी स्पर्धाओं, लॉटरी, प्रेम-संबंध, अच्छी या बुरी मानसिकता, धार्मिक बौद्धिकता, उच्च शिक्षा तथा सत्ता, विशाल संपत्ति आदि का भाव है। गुरु स्वभावतः एक शुभ ग्रह है। पाँचवे भाव में स्थित यह आपकी कुण्डली के 9वें, 11वें तथा पहले भाव को प्रभावित करता है। 16 साल की यह अवधि आपके लिए शान्तिपूर्ण, समृद्धिदायक तथा कल्याणकारी होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा स्वामी गुरु पाँचवें भाव में स्थित है। यह एक त्रिकोण है। गुरु का प्रभाव प्रथम भाव (9वें तथा 11वें के अतिरिक्त) पर है जो व्यक्तित्व तथा व्यक्तिगत मामलों के भाव के साथ-साथ एक त्रिकोण और केन्द्र भी है। फलतः आपकी शत्रुओं से रक्षा होगी। किसी बड़ी दुर्घटना की सम्भावना नहीं है। आप अपने कर्तव्य का पालन करते हुए एक सामान्य जीवन व्यतीत करेंगे।

अर्थ और सम्पत्ति :

गुरु पाँचवें भाव में स्थित है जो प्रतिस्पर्धा तथा विशाल सम्पत्ति का भाव है। अतः आपको अपनी संपत्ति तथा वित्त को बढ़ाने के अनेक अवसर प्राप्त होंगे।

व्यवसाय :

इस दशा काल में आप अत्यन्त ही बुद्धिमान रहेंगे और तर्कशास्त्र तथा कानून में अभिरुचि रहेगी। नौकरी में आपकी पदोन्नति होगी तथा धनोपार्जन का अवसर मिलेगा।

व्यवसाय के प्रति आपके दिमाग में नई-नई योजनाएँ आएंगी जिनके क्रियान्वित होने पर आपको स्रोत तथा वित्त बढ़ाने का अवसर मिलेगा और समाज का सहयोग प्राप्त होगा। गुरु के 11वें भाव पर, (9वें तथा पहले भाव के अतिरिक्त) जो आय का भाव है, प्रभाव के फलस्वरूप आपकी आय में वृद्धि होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु का संबंध दोनों त्रिकोणों के साथ, पाँचवें में स्थित होने तथा 9वें एवं पहले (जो एक त्रिकोण और केंद्र भी है) पर दृष्टि होने से आपका पारिवारिक जीवन काफी उत्साहपूर्ण तथा खुशहाल होगा। आपके जीवनसाथी सहयोगी तथा सहायक होंगे। आपके बच्चे अत्यन्त आज्ञाकारी होंगे। आपका पारिवारिक जीवन अच्छा होगा।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

दोनों त्रिकोणों से सम्बद्ध तथा पंचम भाव में स्थित गुरु की दृष्टि 9वें और पहले भाव (त्रिकोण तथा केन्द्र) पर होने के कारण आपका पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी तथा बच्चे आज्ञाकारी होंगे।



**अंतर्दशा :- गुरु - गुरु
(27/01/2025 - 18/03/2027)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 27/01/2025 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 27/01/2025 को प्रारंभ होकर 18/03/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आपको संतान से खुशी मिलेगी। निवेश और सट्टेबाजी से लाभ हो सकता है। घर में मांगलिक उत्सव हो सकते हैं। सलाहकार के पद पर कार्य कर सकते हैं। समृद्धि का समय है, पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा। भौतिक प्रगति के बहुत से अवसर आएंगे। उच्चशिक्षा उत्तम होगी या शिक्षा पूर्ण हो सकती है।

आपके जीवनसाथी को विभिन्न माध्यमों से धनार्जन होगा, प्रभावशाली मित्र होंगे, सफलता और समृद्धि का योग है। आपके पिता धनी ओर सौभाग्यशाली रहेंगे। माता धनी होंगी ; कार्यों में सफल रहेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए लाभ, उत्कृष्ट समय और साझेदारी से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान को कार्यों में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो तबादला हो सकता है; अप्रत्याशित घटना घट सकती है। परामर्शदाताओं को साझेदारी से लाभ होगा; परिवर्तन हो सकता है। व्यापारी खूब धन कमाएंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। पाचनतंत्र की देखभाल करना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए विष्णुजी की उपासना करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - शनि
(18/03/2027 - 28/09/2029)**

आपकी बृहस्पति की महादशा 27/01/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन रहेगी। आपके लिए यह 18/03/2027 को प्रारंभ होकर 28/09/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपकी प्रोन्नति हो सकती है। व्यापार में लाभ होगा। धनागम होगा, अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं। अपने अवसर खुद खोजेंगे। प्रभावशाली मित्र होंगे जो लाभकारी रहेंगे। धन, सम्मान और उच्चपद प्राप्त होंगे। संतान से सुख मिलेगा। शिक्षा उत्तम होगी। आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी; सब काम बन जाएंगे। विज्ञान या तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। जीवनशैली में परिवर्तन हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता का उत्साह उत्तम रहेगा; संचार माध्यम से लाभ होगा। माता को अचल संपत्ति और धन का अचानक लाभ हो

सकता है। आपके भाई-बहन भाग्यशाली रहेंगे।

आपकी संतान को सामूहिक गतिविधियों से लाभ होगा। अगर वे कार्यरत हैं तो व्यापार में लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम रहेगा, मुकदमे में विजय होगी। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी, धन संचित होगा। व्यापारियों का लाभ उत्तम होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। कान और शरीर के निचले अंगों का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए तेल, तिल, काले वस्त्र और काले जूते दान करें।

**अंतर्दशा :- गुरु - बुध
(28/09/2029 - 04/01/2032)**

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 27/01/2025 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 28/09/2029 को प्रारंभ होकर 04/01/2032 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाजिरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आप लेखन, पठन, अध्यापन आदि में रुचि लेंगे। सब कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण होंगे। महत्वपूर्ण फैसले करेंगे। व्यापार में प्रवीण होंगे। कला में रुचि होगी। संचार माध्यम या कंप्यूटर से जुड़ सकते हैं। अध्यात्म में रुचि होगी। दूरस्थ स्थान के लोगों से संपर्क हो सकता है।

आपके जीवनसाथी की लंबी यात्रा हो सकती है, धनी बनेंगे। आपके पिता को व्यापार या निवेश से लाभ हो सकता है। माता के शुभ कार्यों पर खर्च बढ़ेंगे; अध्यात्म, ध्यान आदि में रुचि लेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए ज्ञान-विज्ञान में रुचि, धनलाभ, निवेश से लाभ और शिशु जन्म का संकेत है।

आपकी संतान के नये मित्र बनेंगे, सम्मान मिलेगा, परीक्षा में सफल होंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो तरक्की करेंगे, धनलाभ होगा, नये मित्र बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय में सफलता मिलेगी। परामर्शदाता सफलता और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे, धनी बनेंगे। व्यापारी भाग्यशाली और धनी होंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। स्नायविक तनाव से बचें। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध मंत्र का जाप करें।

ॐ बुं बुधाय नमः